" शैलेश मटियानी की कृतियों में नारी चित्रण "

(कहानियों के संदर्भ में)

(डॉ.अन्जू देवी)

सारांश

इस समाज में मानव जाति के विभिन्न पहलुओं पर दृष्टि डालने से हमें पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों के संदर्भ में काम करना अत्याधिक उपर्युक्त ठहरता मालूम होता है। अगर देखा जाए तो भारतीय साहित्य में नारी चित्रण को अनेकानेक संदर्भो में दर्शाया गया है, क्योंकि इस समाज के मूल में नारी विद्यमान है, थी और रहेगी। स्त्री न केवल परिवार की धुरी होती है, बल्कि समाज के विकास में भी वह अपनी महत्ती भूमिका निभाती है। नारी परिवार की संरचना से लेकर आर्थिक योगदान, शिक्षा और जागरूकता फैलाने में, सामाजिक न्याय और समानता के लिए प्रयासरत रहती है। वह अपनी संस्कृति और परंपरा को संजोकर रखती है जिससे मानव समाज में सकारात्मक बदलाव आते हैं।

प्राचीन काल में स्त्री की दशा विविधतापूर्ण रही है, जो कि हमेशा से समय, स्थान और संस्कृति के अनुसार बदलती रही है। उस समय नारी को अक्सर गृहणी के रूप में देखा जाता था, उनका जीवन घरेलू यानी घर की सीमाओं तक ही बंधा रहता था। उसे शिक्षा देने से वंचित किया जाता था। उसकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण कहीं- कहीं पर हस्तशिल्प और व्यापार में उसे सक्रिय रहना भी था, उसके अधिकारों को अक्सर पुरुषों और समाज द्वारा नियंत्रित किया जाता रहा है। उसे कई संस्कृतियों में न चाहते हुए भी धार्मिक जीवन जीना पड़ता था। उसका इस तरह का दयनीय जीवन जीने में हमारा पुरुष प्रधान समाज और समाज में नारी के संदर्भ में बनाए गए तरह-तरह के नियम व रूढ़िवादी मान्यताएँ बहुत हद तक जिम्मेदार रही हैं। हालांकि समय के साथ-साथ नारी की स्थिति में कई बदलाव भी आए और वह सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप में सशक्त बनने लगी है। इन बातों से हमारी स्मृति में कई महिलाएँ आती है जिनमें हम रानी लक्ष्मीबाई अपनी जो साहसिकता और निर्भीक नेतृत्व के लिए मशहूर भी हुई उनका जीवन भारतीय इतिहास में नारी शक्ति का प्रतीक रहा है। इसी तरह इंदिरा गांधी का नाम भी लिया जा सकता है उनकी सामाजिक प्ररेणा और राजनीतिक स्थिरता वाले साहसी कार्य अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी। भारतीय कथा साहित्य में सावित्रीबाई फुले, यशोधरा, पद्मावती आदि अनेक महिलाएं हमारी स्मृति में आती हैं जिनको लेकर हमारे भारतीय कथाकारों इतिहासकारों व कहानीकारों ने आधार बनाकर अपने कथा साहित्य का सृजन किया जिसमें उन्होंने स्त्री के त्याग, प्रेम और बलिदान आदि का बखूबी परिचय दिया है।

Edit with WPS Office

प्रस्तावना

नारी चित्रण व नारी विमर्श पर न केवल पुरुषों ने अपनी कलम चलाई है, बल्कि 20वीं शताब्दी तक आते-आते महिला लेखिकाओं ने भी इस नाजुक पहलू पर विचार विमर्श कर उसे लेखनीबद्ध करने का प्रयास किया है। इस दिशा में महान साहित्यकार व कथा सम्राट प्रेमचंद जी ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन्होंने सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर नारी की अनेक दशाओं का वर्णन किया है। जिन्हें समाज की कुरीतियों के घने जाल में फंसकर विवशता भरा जीवन जीना पड़ता है। इन्होंने आर्थिक रूप से ग्रस्त महिलाओं की वीभत्स दशा दिखा कर इस समाज को आईना दिखाने का निर्भीक प्रयत्न किया था। इसके अतिरिक्त जयशंकर प्रसाद ने भी नारी का वह चित्र दिखाने का साहस किया है जो उसे समय की रुढ़ीगत मान्यताओं को धकेल कर नारी का सशक्त रूप अपनी कथाओं में प्रस्तुत करने का जीवट प्रयास करते हुए दिखाई देते हैं। इन्होंने पुरुषों के नजरिये के आधार पर नहीं बल्कि जिस तरह एक स्त्री लेखिका अपनी स्थिति को बयां करने में सक्षम होती है, ठीक उसी प्रकार इन लेखकों ने भी नारी के यथार्थ को समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है। प्रेमचंद व अन्य कथाकरों के नक्शे कदम पर चलकर व उनकी परिपाटी को आगे बढ़ते हुए सन् 1950 से अपना लेखन कार्य आरंभ करने वाले सुप्रसिद्ध साहित्यकार, कहानीकार व निबंधकार के रूप में शैलेश मटियानी जी आए इन्होंने हिंदी कथा साहित्य में अपनी अच्छी खासी धूम मचा दी। शैलेश जी को **गिरिराज किशोर ने** प्रेमचंद से आगे का लेखक ठहराया है। भारतीय कथा साहित्य में समाजवादी परिपाटी से मटियानी के कथा साहित्य का अटूट रिश्ता बताया जा सकता है। यह उनकी कलानुकारी चेतना का सबूत है। उनमें अत्यंत जीवट कर्मठता और संकल्प शक्ति थी यह उनकी चरमोप्लब्धी मानी जा सकती है।

शैलेश मटियानी जी आँचलिक कथाकारों की श्रेणी में आते हैं। इन्होंने अपनी कहानियों व उपन्यासों के माध्यम से सामाजिक चेतना लाने का जीवंत प्रयास किया है, विशेषकर नारी के संदर्भ में। उनके साहित्य में नारी की यथार्थ स्थितियों की झांकी प्रस्तुत की गई है। लेखक के सभी प्रयासों का मूल तत्व नारी ही के संदर्भ में उनकी बदली हुई भावना थी। वे अपने नवीन उद्गारों के बावजूद भी उनकी कहानियों के पात्र भावनामय, मर्यादवादी और कहीं न कहीं नवीन मानवतावादी आदर्श लिए हुए हैं। इसी आधार पर वह अपने विकास की प्रारंभिक कड़ी मानकर चलते हैं। विशेष कर उनकी कहानियों में नारी की विभिषिकाएं व उसका अभावग्रस्त जीवन, अशिक्षा के साथ-साथ उसे सामाजिक, राजनीतिक व पारिवारिक रूप से तिरस्कृतपूर्ण जीवन दिखाया गया है। इन स्थितियों पर आधारित मटियानी जी की कहानियों में 'गृहस्थी', 'हत्यारे', 'गोपुली गफूरन', 'महाभोज', मैमूद','सावित्री', 'रामकली', 'रामप्यारी', 'सुहागिन', 'अर्धांगिनी', 'हारा हुआ', 'माता', 'वह तू ही था', 'किसी से न कहना', 'नीत्शी', 'असमर्थ', 'बोरीवली से बोरी बंदर तक', 'किस्सा नर्मदा बेन गंगूबाई का', आदि रचनाओं में अपनी लेखनी से शब्दबद्ध किया है।

Edit with WPS Office

मटियानी जी की कहानियों का फलक सीमित होते हुए भी अत्यंत गंभीर रूप से पाठक के मन मस्तिष्क पर अपनी गहरी छाप छोड़ जाता है। इनकी शिक्षा के अभाव पर आधारित कहानी '**नीत्शी**' अत्यंत मार्मिकता के साथ प्रस्तुत की गई है। जिसमें कहानी की नायिका नीत्शी अपने परिवार वालों की इकलौती संतान होती है इसकी मां को बार-बार गर्भपात होता है इस समस्या से निजात कहीं अच्छे सुविधापुर्ण अस्पताल में इलाज करने पर होता लेकिन गांव में इस तरह की सुविधाओं का अभाव रहने पर वह अपनी माँ के इलाज की लालसा लिए स्वयं शहर में पढ़ने जाती है कि एक दिन वह अपनी मां का इलाज कर सके , लेकिन नीत्शी की किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। वह किस तरह अपनी हॉस्टल की वार्डन की संगत में आती है, और यही संगत उसे गर्भवती होने का सफर तय कराती है। यहां तक उसे कई तरह के आश्वासन व प्रलोभन भी दिए जाते हैं लेकिन वह भीतर से बिल्कुल टूट जाती है। वह अपनी माँ व परिवार को सुविधाएं देने के बजाए स्वयं किस विकट परिस्थितियों में फंस जाती है। यहाँ पर हमें साफ तौर पर शिक्षा के प्रति जागरूकत का अभाव आदि दिखाई पड़ता है। शिक्षा के संदर्भ में वंदना जी कहती हैं कि "नारियों के लिए सबसे बड़ा अभिशाप उनकी अशिक्षा थी और उनकी परतंत्रता का प्रमुख कारण उनकी आर्थिक स्वतंत्रता का अभाव था। आज की स्थिति परिवर्तित हुई है जहाँ पर हर क्षेत्र का दरवाजा लड़कियों के लिए खुला दिखलाई पड़ता है, वह अपनी जागरूकता द्वारा हर जगह प्रवेश पाने लगी है, जमीन से आसमान तक, पृथ्वी से चाँद तक उनकी पहुँच मानी जाती है।"**1** इस कहानी की नायिका नीत्शी की मनोदशा का अत्यंत सजीव वर्णन पाठकों के समक्ष अंकित किया गया है। एक स्त्री को किस तरह उसे भ्रष्ट कर अभावपूर्ण जीवन जीने के लिए छोड़ दिया जाता है। यह हमारे समाज का अत्यंत कड़वा सत्य है। इस तरह के अनेक अभावपूर्ण प्रसंग व समस्याओं को लेखक ने ग्रामीण व महानगरीय क्षेत्र के कटु सत्य हमारे सामने प्रस्तुत करने में सफल हुए हैं।

इस तरह लेखक की अन्य कहानी '**असमर्थ**" है जिसमें नारी की इच्छाओं को किस प्रकार कुचला जाता है, लेकिन वह कहते हैं न कि जब पानी सर से ऊपर चला जाए तो उससे निजात पाना अत्यंत आवश्यक हो जाता है, ठीक इस कहानी की नायिका पार्वती के जीवन में भी ऐसी घटनाएं घटित होती हैं। वह एक निम्न मध्य परिवार से थी। आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण उसका विवाह किसी बहादुरसिंह अपाहिज व्यक्ति से होता है, जो अपने घर में तिरस्कृत जीवन यापन करता है। वह अपने ही घर में सौतेले भाइयों की घृणा और आक्रोश सहने का आदी था, लेकिन पार्वती अपने पति पर हो रहे अत्याचार को कैसे देख सकती थी, वे अत्यंत विवश होकर अपने पति की असमर्थता को देखकर किसी शिवचरण नाम के व्यक्ति के साथ सम्पूर्ण, खुशहाल व स्वतंत्र जीवन जीने की उत्कंठा लिए भाग जाने की फिराक में रहती है। किंतु वह मन ही मन अपने पति के प्रति परिवार के अमानवीय व्यवहार को देखकर दूसरे आदमी के साथ जाने में असमर्थ हो जाती है। यहाँ पर नारी के अंतर्मन का चित्र लेखक ने बहुत ही संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। इस समाज में विशेषकर नारी के लिए उपेक्षित जीवन जीना कितना दुषकर होता है। ऐसी स्थिति में नारी को भावनात्मक, मानसिक, पारिवारिक, शारीरिक, आर्थिक व सामाजिक दबाव का सामना करना

Edit with WPS Office

पड़ता है। कहानीकार मटियानी जी ने अपनी अनेक रचनाओं में ऐसी घटनाओं को अत्यंत मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया है।अत: जिस पर समाज को अत्यंत गंम्भीरता के साथ इस नाजुक पहलु पर कार्य करने की अवश्यकता है।

इसी तरह शैलेश मटियानी जी की एक अन्य कहानी '**सुहागिनी**" है जिसमें स्त्री की मनोदेशा का चित्रण किया गया है। समाज में नारी को मध्य नजर रखते हुए ऐसे ऐसे नियम व कानून बनाए गए हैं जिन्हें वे स्वयं पर लागू करने की कल्पना तक नहीं कर सकते, लेकिन वह नारी को हमेशा इस धुरी पर ला खड़ा करने में अपने जीवन का एकमात्र लक्ष्य मानते हैं। लेखक ने भी ऐसे ही विषय और पात्रों को अपने कथा साहित्य में लिया है जिसे समाज में अत्यंत तिरस्कृत व अवांछनीय जीवन जीने पर विवश किया जाता है, उन्होंने समाज को अधिक चिंतन कर सुलझाने का कार्य करने के लिए प्रेरित किया है। सुहागिनी कहानी की नायिका पद्मावती रूपवान न होने के कारण पैंतालीस वर्ष तक अविवाहित रहती है। यहाँ पर किस तरह से परिवार और समाज धार्मिक नियम लागू कर देते हैं, जिसका विवाह तांबे के कलश जिसे (रामचंद्र का प्रतीक) पति के रूप में इस कलश की सेवा में अपनी सारी जिंदगी गुजार देने पर विवश किया जाता है। कहानीकार ने इस तरह की रूढ़िवादियों धारणाओं का पर्दा समाज से उठाने का बहुत ही सरहानीय कार्य किया है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि समाज की रूढ़िवादी मान्यताओं में फंसी नारी का जीवन अक्सर पारंपरिक मान्यताओं और सामाजिक अपेक्षाओं से प्रभावित रहता है। इसमें नारी की स्वतंत्रता का अभाव तथा संस्कृति और परंपरा का पालन करते-करते भावनात्मक दबाव में रहना कुल मिलाकर उसका संपूर्ण जीवन चुनौतियों और संघर्षों से भरा रहता है। जहाँ वह स्वयं को व्यक्त करने और अपनी पहचान बनाने में अनेक कठिनाइयों को महसूस करती है। "इस तरह शैलेश जी की कहानियों में अर्थ ही पाठक के लिए आकर्षक और पाठनीय होता है।"2

इस समाज में स्त्री को हमेशा से ही कई प्रकार की चुनौतियों और संघर्षों का सामना करना पड़ता आ रहा है, विशेष कर पति के अभाव में समाज के पारंपरिक दृष्टिकोण और परिवार की अपेक्षाओं के कारण उसे कई तरह की सामाजिक, मानसिक और आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। किस तरह पति के न रहने पर तरह-तरह की आलोचनाओं व आक्षेप लगाकर उसके चरित्र पर संदेह किया जाता है। इसी तरह के संघर्षों से गिरी हुई कहानी मटियानी जी की '**गोपुली गफूरन**' है जो पति के बिना अपने दो बच्चों और परिवार का पालन पोषण करने का दम रखती है, ऐसे में वह अपने बच्चों का भविष्य और अपने जीवन यापन के लिए अनेक विकट परिस्थितियों का सामना करती हुई अंतत: वह अपना धर्म परिवर्तन कर किसी अहमद अली से निकाह कर देती है। जहाँ उसे मानसिक तनाव और असुरक्षा अनुभव होती है। यहाँ पर देखा जाए तो लेखक के कथा साहित्य में नारी पात्र अंत तक परिस्थितियों से लड़ते हुए दिखाई देते हैं। लेकिन विभिन्न समस्याओं से घिरे रहने पर अंत में वह अपने घुटने टेकती हुई भी नजर आती है। इस कहानी के आमुख में गोपुली की इस यातना भारी यात्रा को मुखरित करते हुए लेखक कहते हैं कि " गोपुली का गफूरन' बनना उस निमित्त का प्रकट होना है जो प्रकृति अथवा परमात्मा की कल्पना में स्त्री को

Edit with WPS Office

रचते निहित रहा होगा।"3

कहानीकार मटियानी जी के कथा साहित्य में **'रामकली'** नामक युवती की कथा सामने आती है जिसमें अनमेल विवाह से उतपन्न समस्याओं का खुलकर चित्रण किया गया है। जिसमें पति और पत्नी के बीच सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व आयु के दृष्टिकोण से उत्पन्न असमानताओं को दिखाया गया है। उसके संबंध में लेखक कहते हैं कि "सचमुच कितना विचित्र है कि बसंतालाल के साथ की गृहस्थी रामकली को अब धीरे-धीरे ज्यादा चुभने लगी है, जबकि शादी हुए दस वर्ष बीत चुके हैं अब वह दो बच्चों की माँ बन चुकाने के बाद भी ज्यादा चुभने लगा है कि वह बसंतालाल को अपनी उम्र और जिस्म के साथ तोलकर देखने लगी है-।" इस प्रकार आर्थिक और मानसिक अभाव के कारण रामकली अपने पति और बच्चों को छोड़कर अनेक पुरुषों के संपर्क में आती है लेकिन हर बार उसे धोखा और छल का सामना करना पड़ता है। कथाकार अपने भावों की अभिव्यक्ति पात्रों के माध्यम से करवाते हैं, यहाँ बसंत लाल अपनी समझदारी की पहचान दिखाते हुए रामकली को सांत्वना देता है कि- "तेरे मेरे बीच उम्र का इतना फैसला न होता तो रामकली हम लोगों की गृहस्थी में दरार न पड़ती।"4 कहा जा सकता है कि पति-पत्नी दोनों का समझदार होना अत्यंत आवश्यक है। खासकर अनमेल विवाह में सफल होने के लिए दोनों तरफ से धैर्य, समझ और एक दूसरे के प्रति सम्मान होना आवश्यक है।

मटियानी जी की कहानियों में गरीब माता-पिता की बहू बेटियों का दैहिक शोषण भी देखने को मिलता है। यौन उत्पीड़न समाज में एक गंभीर और संवेदनशील समस्या है जिस पर समाज और समाज में बनाए गए नियम व कानून को लागू कर अत्यंत समझदारी के साथ जागरुकता को फैलाने का सहरानीय कार्य करने की आवश्यकता है। अक्सर ऐसे परिवारों की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण कुछ लोग निर्दोष युवतियों के साथ अमानवीय व्यवहार कर अपनी कुबुद्धि का परिचय देते हैं। जिसके कारण न जाने कितनी ही युवतियों ने आत्महत्या का रास्ता अपनाया है। इसी तरह की समस्याओं को दर्शाती हुई मटियानी जी की कहानी **'सावित्री'** सामने आती है, जिसकी नायिका सावित्री ही होती है वह गरीबी और आर्थिक अभाव को दूर करने के लिए लोगों के घरों में काम-काज कर धनोपार्जन करती है, जहाँ उसे यौन शोषण का शिकार भी होना पड़ता है। इस कहानी में जनार्दन नाम का पात्र सुसंस्कृत होने पर भी सावित्री के साथ घिनौनी हरकत करने से बाज नहीं आता है, इसके अतिरिक्त सावित्री गली का उपद्रवी बच्चालाला भी उसका दैहिक शोषण करने के उपरांत वह सावित्री से विवाह कर लेता है, जिसके बाद उसे मानसिक और शारीरिक रूप से प्रताड़ित भी करता है। इतना होने पर भी वह स्वाभिमानी उस निर्दय पति के प्रति प्रेम व दया भाव रखती हुई दिखाई देती है। लेखक की दृष्टि विशेषकर स्त्री पात्रों के प्रति अत्यंत संवेदनशील रही है। उन्होंने समाज में व्याप्त अनेक समस्याओं को उजागर कर अपनी तीक्ष्ण बुद्धि का परिचय दिया है। सावित्री के विषय में मटियानी जी अपने भावों को अभिव्यक्ति करते हुए कहते हैं कि "वास्तव में सावित्री हमारे समाज का वह घिनौना रूप हमारे सामने प्रस्तुत करता है जिसकी कल्पना मात्र से

Edit with WPS Office

हम सिहर उठते हैं, उद्वेलित होते हैं सावित्री का चरित्र हमेशा के लिए हमारी स्मृति में अपना स्थान बना लेता है।" **5** इस प्रकार हम कह सकते हैं की दैहिक शोषण जैसी समस्याओं को खत्म करने के लिए हमें व्यक्तिगत, सामाजिक और सरकारी स्तर पर मजबूत कदम उठाने की कोशिश करनी चाहिए ताकि समाज में इन युवतियों को सुरक्षा और अधिकारों के प्रति सचेत किया जा सके। जिससे वह एक सुरक्षित और गरिमामय जीवन जी सके।

निष्कर्ष:- कथाकार मटियानी जी अपनी कथाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त अनेक समस्याओं को उजागर करने में सफल हुए हैं। विशेषत: उन्होंने समाज में आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, मानसिक और शारीरिक रूप से प्रताड़ित नारी की विभिन्न स्थितियों का अत्यंत मार्मिक चित्रांकन किया है। उनकी इसी तीक्ष्ण तथा कलानुकारी दृष्टि से समाज का कोई भी कोना नहीं बच पाया है। अत: यही उनकी चरमोप्लब्धि मानी जाती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. 'आजकल' मार्च 2013, पृष्ठ संख्या 27.

2. शैलेश मटियानी सुहागिन तथा अन्य कहानियां प्रकाशकीय भूमिका से.

3.शैलेश मटियानी की कहानी 'गोपुली गफूरन' आमुख से.

4.शैलेश मटियानी 'रामकली' उपन्यास, पृष्ठ संख्या 19, 109.

5.शैलेश मटियानी 'सावित्री' उपन्यास मुख्य पृष्ठ से

Edit with WPS Office